परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

(जुलाई, 2022 तथा जनवरी, 2023 सत्रों के लिए)

MSK-003 : दर्शन : न्याय, वैशेषिक, वेदान्त सांख्या और मीमांसा

मानविकी विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

परास्नातक कार्यक्रम
सत्रीय कार्य (2022–23)

पाठ्यक्रम कोड : MSK–003/2022–23

प्रिय छात्र/छात्राओं

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ——————————

नाम : ——————————

पता : ——————————

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ——————————

सत्रीय कार्य कोड : ——————————

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ——————————

दिनांक : ——————————

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।
2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए, और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजि,।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2022 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2023

जनवरी 2023 सत्र के लिए : 30 सितंबर, 2023

सत्रीय कार्य

MSK–003: दर्शनः न्याय, वैशेषिक, वेदान्त संख्या और मीमांसा

पाठ्यक्रम कोड –MSK: 003
पाठयक्रम शीर्षक : **दर्शनः न्याय, वैशेषिक, वेदान्त संख्या और मीमांसा**
सत्रीय कार्य : MSK – 003/2022–2023
कुल अंक – 100

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) भारतीय दर्शनों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

न्याय-वैशेषिक दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

(ख) तर्क संग्रह के अनुसार शब्द-प्रमाण का विवेचन कीजिए।

अथवा

वेदान्त के अनुसार अनुबन्ध चतष्टय की व्याख्या कीजिए।

(ग) सांख्य दर्शन के अनुसार प्रमाण का विवेचन कीजिए ।

अथवा

मीमांसा दर्शन का परिचय देते हुए 'मन्त्र' पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-ख

2. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10×4= 40

(क) उत्क्षेपणावक्षेपणाकञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि ।

अथवा

असाधारणं कारणं करणम। कार्यनियतपर्ववत्तिः कारणम। कार्यं प्रागभावप्रतियोगि।

(ख) 'अधिकारी त विधिवदधीतवेद वेदाङ्गगत्वेना पाततोऽधिगताखिल वेदार्थोऽस्मिन जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपरस्सरं नित्यनैमित्तिक प्रायश्चितोपासनानष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतष्टयसम्पन्नः प्रमाता।

अथवा

अपवादो नाम रज्जविवर्तस्य सर्पस्य रज्जमात्रत्व वद्रस्तविवर्तस्यावस्तनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य

वस्तमात्रत्वम। तदक्तम-सतन्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्यदीरितः अतन्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्यदीरितः इति

(ग) दुःखत्रयाभिघाताजिज्ञासा तदपघातकेहेतौ। दष्टे सापार्थाचेन्नैकान्तान्यन्ततोभावात ।।

अथवा

एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाऽशक्तितुष्टिसिद्ध्याख्यः। गण वैषम्यविमर्दात तस्य च भेदस्त पञ्चाशत ।।

(घ) वेदप्रतिपाद्यन्वे प्रयोजनवन्वे च सत्यर्थत्व धर्मन्वमिति धर्मलक्षणमपन्नम।

अथवा

अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः ।

खण्ड-ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिए: 5 × 6 = 30

(क) अर्थवाद

(ख) त्रिविधकारण

(ग) सत्कार्यवाद

(घ) सक्ष्मशरीर

(ङ) उपमान

(च) सांख्यसम्मत पदार्थ

(छ) भावना